++++याद++++
यादों से संगम को सफल करो+++
अपनें विकार्मों के बोझों को भस्म करो+++
याद है अग्नि आत्मा इसमे ही निखरती+++
आत्मा की जंक है कटती नये संस्कार
भरती+++
याद की मंजिल है बहुत ऊँची+++
मौसी का खेल नही है समझो+++
माया इसमें ही विघ्न डालती+++
याद से ही बाप की कशिश होती+++
याद से है पवित्र हम बनते+++
याद से ही आयु फिर बढती+++
याद का सच्चा चार्ट रखो+++
अपने को स्वयं ही चेक करो+++
न अपना मिया मिठठु बनो+++
न ही खुद को फिर ठगों+++
अपने को आत्मा समझ+++
बाप और सृष्टि चक्र को याद करो+++
जो जितना करेगा याद+++
उतना ही उंच पद पायेगा+++
जो नही फिर पछतायेगा+++
याद में है धार ,करती सब नष्ट विकार +++
याद में जोहर भर कल्याण करो+++
अपने बाप समान बन राज्य करो+++

ॐ शांति!!
शिव बाबा!!